ज्योतिष

Duration : 04.10 Transcribed words : 842

- संगीत -

00. आचार्य अनुपम जौली : मेरा नाम आचार्य अनुपम जौली है और मैं ज्योतिष का कार्य करता हूँ..

00. डॉ. हिमानी जौली : मेरा नाम हिमानी है और मेरा विशेष रूप से काम पहले प्रयास से ये रहता है कि समाज के लिये कुछ ना कुछ ऐसा करती रहूँ जिससे लोगों को आगे से आगे मदद मिल सके... मैं टैरो कार्ड रीडर हूँ... प्रोफेशनली जो लोग मुझे, मेरे बारे में जानते हैं, टैरो को समझा बहुत साधारण शब्द, विषय जाता है कि भई कुछ कार्डस हैं, कुछ कार्डस आप परचेस कर लीजिये और कार्डस निकालें, उससे सब कुछ पता चल जाता है, पर टैरो एक बहुत ही जुड़ा हुआ शब्द है हमारी आत्मा से क्योंकि ये औरा से रिलेट होकर काम करता है... हमारा शरीर का जो आभा मंडल है, उसके साथ कनैक्ट होकर काम करता है... अट्ठत्तर पत्ते हैं, आप देख सकते हैं आपके सामने रखे हैं... और इनमें एक खास बात ये होती है कि विशेष परिस्थिति में परटीकुलर पत्ता ही सलैक्ट होकर बाहर निकलता है... वो ही पत्ते निकलकर बाहर आते हैं जो आपके प्रश्न से, उस प्रश्न के पास्ट, प्रैजेन्ट और फ्यूचर से जुड़े हुये होते हैं...

01.06 आचार्य अनुपम जौली : वेदों का नेत्र कहा है ज्योतिष को... और ज्योतिष शब्द के अंदर सब कुछ छिपा हुआ है... उसमें लिखा हुआ है ज्योति प्लस ईश... मतलब लाईट ऑफ गॉड... जो कि ईश्वरीय रौशनी है और ईश्वर रौशनी की हमें पास्ट, प्रैजेन्ट और फ्यूचर... भूत काल, वर्तमान और भविष्य, तीनों का ज्ञान करा सकता है...

01.22 डॉ. हिमानी जौली : मानव समाज जब विकसित नहीं था तो संकेतों से आधारित भाषा का प्रयोग किया जाता था... एक मैसेज को दूसरे मैसेज तक पहुँचाने के लिये हम कुछ चित्रों का प्रयोग करते थे... अभी हम जो इँग्लिश और हिन्दी लिख रहे हैं वो एक तरीके की डवलप लैंग्वेज है... बिलकुल, जैसे कहना चाहिये रेडीमेट फूड की तरह से है, जो हमने सर्व कर दिया... पर वो जो सांकेतिक भाषा थी, उसका अपना एक महत्व था... वो किसी संदेश को पहुँचाने का काम करती थी और आज टैरो में वो सांकेतिक भाषा, ईश्वर का संकेत हम तक पहुँचाने का काम करते हैं...

01.48 आचार्य अनुपम जौली : ज्योतिष के तीन पार्ट हैं... सिद्धांत, संहिता और होरा... सिद्धांत का मतलब ये है, जो हमारी ऐस्ट्रोनौमी की गणनायें हैं, जो हमारी खगोल की गणनायें हैं, वो बिना गणित के संभव नहीं हैं... उन गणनाओं से जो प्रतिफलित हो रहा है, जो रिजल्टस निकल रहे हैं, जैसे कि अमावस्या होना, पूर्णिमा होना, ग्रहण होना, वो संहिता खंड में होता है... और उसके भी जो रिजल्टस होते हैं वो संहिता खण्ड में देखे जाते हैं... तीसरा पार्ट है होरा... इन दोनों से निर्मित, जब जन्म पत्रिका या जो भी गणित आती है, उस गणित को, भविष्य उससे बता पाने, पास्ट, प्रैजेन्ट और फ्यूचर उससे बता पाने में समर्थ होरा करता है... होरा शब्द अहो रात्रि से बना है... अहो का हो, रात्रि का रा... मतलब, जो हम लोग कहते हैं, जैसे कि आपके दिनमान कैसे हैं... तो दिन और रात का जो विज्ञान है, दैट इज होरा... इस होरा में हम प्रिडिक्टिव पार्ट पढ़ते हैं... तो गणित आता होगा तभी हम जन्म पत्रिका बना पायेंगे और जन्म पत्रिका बना पायेंगे तो होरा के लिये अनेबल हो पायेंगे... उसको पढ़ने के लिये गणित बहुत जरूरी है, इस ज्योतिष विद्या के अंदर...

02.47 डॉ. हिमानी जौली : एक बच्चा जो गणित में दिलचस्पी रखता है, मैथ्स अच्छे से समझना चाहता है और अगर उसे बताया जाये कि वन प्लस वन इजीक्वल टू टू होता है, तो टैरो भी इसी तरीके से है... टैरो के सिस्टम्स हैं... हर चीज का एक कारण होता है... हर संकेत के पीछे एक रहस्य छुपा होता है... उस रहस्य को हम प्रिवेल करते हैं... समझने के लिये कुछ कोर सिस्टम की जरूरत जरूर पड़ती है, हालाँकि कई बार लोग इसे इन्टूशन से जोड़ने की बहुत गलती करते हैं लेकिन मैं व्यक्तिगत रूप पर, मतलब, इन्टूशन जैसे शब्द पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करती...

03.15 आचार्य अनुपम जौली : रस्ते अलग अलग हैं पर उनका जो रिजल्ट है वो सेम है... और, क्योंकि बहुत सारे रस्ते हैं और हर आदमी अपना रास्ता खुद चुनता है... तो हमारे यहां भी इस विद्या को सिखाने के बहुत सारे रास्ते हैं... जैसा कि ज्योतिष जो आप समझते हैं, जिसमें ग्रहों की बातें होती हैं, आसमान की बात होती है, नक्षत्र तारों की बात होती है... इसके अलावा भी रमल विद्या है जो कि एक बहुत प्राचीन विद्या है... पासे होते हैं, जो कि अष्ट धातु के पासे होते हैं, और एक पर्टिकुलर नक्षत्र में, पर्टिकुलर दिन उसका निर्माण होता है और उससे हम भविष्य बता पाने में सक्षम होते हैं... क्रिस्टल बॉल गेजिंग है... एक क्रिस्टल बॉल होता है, उसके अंदर हम भविष्य को देख पाने में सक्षम होते हैं... वो हालाँकि अंतरज्ञान से सम्बन्धित विज्ञान है, जिसकी प्रैक्टिसिज हम लोग यहाँ कराते हैं...

03.59 आचार्य अनुपम जौली : आने वाला समय एक बहुत ही वैज्ञानिक तरीके से इस विद्या का एक अच्छे रूप में, इस, इसकी बढ़ोत्तरी होती मैं जयपुर में देख रहा हूँ...